By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

page no.1

Lecture-1

Topic-Political Parties in UK

Class-B.A Degree-2(Hons.,P-4)

Subject-Political Science

Date-15 Oct.,2020

By Rahul Kumar Jha.

ब्रिटेन में दलीय व्यवस्था :-
(Party System in Britain)

ब्रिटिश संसद की तरह ही ब्रिटिश दलीय प्रणाली भी संसदात्मक दलीय प्रणाली की जननी है। ब्रिटेन में दल-व्यवस्था के विकास के अंकुर उस समय देखे जा सकते हैं, जब स्टुअर्टकाल में राजा और जनता में प्रभुत्व के लिए संघर्ष हुआ। इससे पहले 1455-1485 में वार ऑफ रोजेज के समय भी देश में दो दल थे। एक दल का नाम लंकास्ट्रियन तथा दूसरे दल का नाम यारकिस्ट था। स्टुअर्टकाल में यही दल, राउंड-हेड्स और

केवेलियर्स कहलाने लगे थे। इस समय तक दोनों दल अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए शक्ति का प्रयोग करते थे।

1688 ई० की गौरवपूर्ण क्रांति के बाद जब संसद की मान्यता स्वीकार कर ली गई, तब दलों का फिर से संगठन हुआ। दोनों दलों को ह्विग तथा टोरी कहा जाने लगा। इस समय तक दलों का प्रभाव स्पष्ट हो चुका था। टोरी दल ग्रामीण जनता के पक्ष में था जबकि ह्विग दल व्यावसायिक लोगों की जनता का समर्थक था। टोरी दल चर्च ऑफ इंगलैंड का पक्षपाती था, जबकि ह्विग दल डिसेंटर्स का पक्षपाती था। इस प्रकार, दोनों दलों के बीच सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक बातों में भिन्नता स्थापित हुई।

आगे चलकर टोरी दल अनुदार दल कहा जाने लगा और ह्विग दल अपने को उदार दल कहने लगा। 19वीं सदी में इन दोनों

के बीच संघर्ष रहा। 20वीं सदी में मजदूर दल का विकास हुआ, इससे उदार दल का महत्व घटने लगा। प्रथम विश्व युद्ध के समाप्त होने तक मजदूर दल ने उदार दल का स्थान लेना प्रारंभ कर दिया। आज जब हम ब्रिटेन में द्वि-दलीय व्यवस्था की बातें करते हैं, तब हमारा आशय श्रमिक दल और अनुदार दल की प्रधानता से होता है। वैसे कुछ अन्य दल भी अस्तित्व में हैं, लेकिन ब्रिटिश राजनीति में उनका कोई निर्णायक स्थान नहीं है।

अगर हम ब्रिटिश दलीय व्यवस्था की प्रमुख विशेषता को देखें तो कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ है – द्विदलीय प्रणाली, गुट की प्रथा का अभाव, लगातार सक्रियता, केन्द्रीयता, अपना अस्तित्व तथा एक-दूसरे के प्रति उदार की भावना का होना आदि।